आओ चले गांव की ओर

हमारी इच्छा थी कि इस शताब्दी का पहला कुम्भ मेला जो इलाहाबाद मे आयोजित था उसमे भाग ले और उसे देखा भी जाय । हमने एक और निश्चय भी कर लिया था कि अब हम समय को बेच कर पैसा कमाने की अवश्यकता नही है । वरन दोनो मिलकर समय व स्वस्थ के रहते समाज सेवा करनी है । हिन्दू धर्म मे आस्था के कारण से आयु के अनुसार बानप्रस्थ की ओर प्रेरित हो चूका है । यहाँ अमेरिका मे हम अपना अधिकांशसमय समाज सेवा मे ही लगाते है हमने सोचा क्यो न अपने समय का कुछ अंश भारत के गाँवो के उत्थान मे योगदान मे लगाया जाय ।

हमने अपने कुछ मित्रो व सहयोगियो से मिलकर भारत मे कियाशील NGO (Non Government Organizations) के पत्ते लिये ओर उनसे पत्राचार प्रराम्भ कर दिया । समय रहते, और देखते देखते चार महीनो की यात्रा की रूप रेखा बन तैय्यार हो गई जो भरत के सात प्रदेशो व एक सौ वीस गाँवो व शहरो को छूती हुई निकल रही थी । ये सात राज्य थे उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, बंगाल, उढ़ीसा, और झारखन्ड । इन गाँवो ब सब शहरो के नाम यँहा लिखना आप सबके साथ अन्याय होगा । मै तो आपको यहि बताउगा कि हमे ज्या हासिल हुआ इस सफर में ।

हमे गाँवो की समस्याओ को समझने मे आसानी हुई और उन लोगो के साथ बैठकर उनकी समस्याओ को उनके ही साधनो व प्रयत्नो से सुलझाने मे वडा ही आनन्द आया । और साथ ही यह भी समझ मे आया की भारत एक गरीब देश नही है वरन बितरण प्रणाली मे दोषो की वजह से जकडी समस्याये है । तथ्यो को नही जानना ही समस्या है, जागरुकता या ठीक से नही सोच पाना भी एक कमी है । इन कारणो से निराशा का वतावरण पैदा हो गया है । क्योकि लोगो को नये ढ़ंग से सोचना व समस्याओ को सुलझाना नही आता है वे वही करते रहते है जो सदा करते चले आये है और फल भी वही मिलेगा जो अब तक मिलता आ रहा है ।

नये समय की जरुरत है कि समस्याओ को नया अंजाम व नई दिशा दी जाय ताकि उन्हे समाधान भीमिलेऔर देश भी आगे वढ़े । जैसा हम पहले भी लिख चुके है कि भारत एक सम्पन्न देश है किन्तु यहाँ वितरण व्यवस्था दोषपूर्ण है जानकारी चाहे नियमो की हो या अपने अधिकारो की यह सिर्फ मध्यवर्ग तक ही सीमित है, यह निम्न वर्ग तक नही पहुंच सकी है । न सरकार नाही गैर सरकारी सनस्थाये इस दिशा मे अधिक कार्य कर रही है । सरकार सोचती है कि अखवारो मे निकाल दिया टी वी मे खबर छपवा दी तो समस्या का हल हो गई, हमारा काम पूरा हो गया । इस सन्दर्भ मे एक मजेदार घटना आपको बताता हूँ जो बहुत पढी लिखी व सम्भ्रान्त परिवार से थी हमसे कहने लगी भाई साहब आप बेकार ही गाँव गाँव जा रह है राजस्थान मे, कल ही टीवी पर सरकार के एक मँत्री ने घोषणा की है कि ट्रेन से पानी हर जगह पहुंचा दिया जायेगा । हमने उनसे एक सवाल किया क्या ट्रेन उस गअँव मे भी पानी पहूचा देगी जो आठ सौ फुट की उचांई पर है ? तब उनको शायद पानी की समस्या क्या है समझ मे आ गई । गाँवो मे पानी सिर्फ पीनेके लिये ही नही वल्कि खेतो की सिचाई के लिये भी चाहिये , जो कि गाँव की जीविका का मुख्य साधन है। यह समस्या सिर्फ नारो से नही हल की जा सकती है । एक चीनी नेता ने भारत के बारे मे कहा हे कि भारतीय जनता की सबसे बडी गलती यह है कि वह समझती है कि सिर्फ नारो से या प्रोपगन्डा को ही सत्य मान लेती है और स्वयंसत्य की खोज नही करती है । तथ्यो की गिनती मे नारो या सम्भावनाओ को सम्लित नही करना चाहिए । पानी विजली और गैस या ईधन को गाँवो तक ले जाने के लिये हमे ठोस कदम उठाने होगे ।

आज की पुकार यह होनी चाहिये कि हम शहर मे रहने बाले, गाँव मे रहने की देख भाल करे । जैसे गाँव हमारे लिये सब्जी फल आनाज साग दूध की माँग को पूरा करते है, हमे भी अपना कर्ज उतारना होगा गाँव तक विज्ञान व सूचनाये पहुचाकर । यह चेतना सभी का जन्मसिध्य अधिकार है और इसे गाँव तक पहुचाना हम सब का मूल भूत कर्त्तवय है । इस सम्बन्ध मे मै यह कहना चाहूँगा कि हम सब जो पचास की उर्म पार कर चुके है उन्हे अपने परिवार मे ही सिमटी जिन्दगी का दायरा बडाकर समाज तक फैलाना चाहिये । इससे उन्हे व्यक्तिगत खुशी मिलेगी और जीन मे एक प्रयोजन का अनुभव होगा । इसका मतलव यह भी नही है कि ापने परिवार की ओर ध्यान ही न दो वरन कुछ समय समाज मे भी लगाओ जिससे तुम्हे सबकुछ मिला है और कुटम्वियो को अपने उपर निर्भर ना होने दें ।

अगर हममे से प्रत्येक सिर्फ एक परिवार को से जो गाँव मेरहता हो सम्पर्क बना ले और एक क्षण क लिये यह भूकर कि वह समारे से फायगा उठायेगे सच्चे मन से उनकी स्मास्याओ को सुने और उनका मार्ग दर्शन करे तो हम अपने भारत की दशा मे सुधार ला सकते है । सरकार तो हम देख ही रहे है पिछले 53 साल मे वह सव नही कर सकी जो उसे करना चाहिये । सरकार की असफलता और भ्रष्टाचार की भर्त्सना मे समय न बरवाद करके हमयह काम अपने हाथो मे लेा होगा । ठीक उसी प्रकार जैसे हम अपने परिवार को उँजा उठाने का प्रयत्न करते है ।

हमे सच मायने मे हिन्दू होने का गर्व होगा यदि हम हिन्दू धर्म जो मानव धर्म है उसके नियमो पर चलेगे । हम अपने आप स्वयं के अनुभवो से यह कह सकता हूँ कि पूर संसार मे इससे ज्यादा सुख की अनुभूति कभी नही होती है जितनी परउपकार मे होती है जैस गोस्वामी तुलसी दास जी ने राम चरित मानस मे कहा है - परहित वस जिनके मन माही, तिन नही कछु जग दुलर्भ नाही ।

रश्मि उमेश रोहतगी नोवी मिचिगन अमरीका Email: rurohatgi@yahoo.com
Umesh rashi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA phone: (248)471-5786 webpage:www.rurohatgi.com